Std-VI **Subject-Hindi**

Summative Assessment Assignment-1(2020-21)

अपठित-विभाग

अपठित गदयांश को पढकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. समय बहुत मूल्यावान होता है। यह बीत जाए तो लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करके भी इसे वापस नहीं लाया जा सकता। इस संसार में जिसने भी समय की कद्र की है, उसने सुख के साथ जीवन गुजारा है और जिसने समय की बर्बादी की, वह खुद ही बर्बाद हो गया है। समय का मूल्य उस खिलाड़ी से पूछिए, जो सेकंड के सौवे हिस्से से पदक चूक गया हो। स्टेशन पर खड़ी रेलगाड़ी एक मिनट के विलंब से छूट जाती है। आजकल तो कई विद्यालयों में देरी से आने पर विद्यालय में प्रवेश भी नहीं करने दिया जाता। छात्रों को तो समय का मूल्य और भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिए, क्योंकि इस जीवन की कद्र करके वे अपने जीवन के लक्ष्य को पा सकते हैं।

(क) उपरोक्त गद्यांश में कीमती किसे माना गया है?

(i) जीवन को

(ii) अनुशासन को

(iii) समय को

(iv) खेल को

(ख) किसने सुख के साथ जीवन गुजारा

(i) जिसने दुनिया में खूब धन कमाया

(ii) जिसने मीठी बाणी बोली

(iii) जिसने समय की कद्र की

(iv) जिसने समय को बर्बाद किया

(ग) सेकंड के सौवें हिस्से से पदक कौन चूक जाता है

(i) खिलाडी जिसने मामूली अंतर से पदक गंवा दिया हो

(ii) वह यात्री जिसकी ट्रेन छूट गई

(iii) उपर्युक्त दोनों लोग

(iv) इनमें कोई नहीं

(घ) छात्रों को समय की कद्र करने से क्या लाभ होता है?

(i) वे स्वस्थ हो जाते हैं।

(ii) वे मेधावी बन जाते हैं।

(iii) वे सभी विषयों में **100%** अंक प्राप्त करते हैं।

(iv) वे लोकप्रिय हो जाते हैं।

(ङ) इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा

(i) समय का मूल्य

(ii) जीवन का लक्ष्य

(iii) विद्यार्थी जीवन में समय का महत्त्व

(iv) अनुशासन

उत्तर-

(क) (iii)

(ख) (iii)

(ग) (iii)

(घ) (iii)

(ङ) (i)

2. बढ़ती जनसंख्या ने अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म दिया है-रोटी, कपड़ा, मकान की कमी, बेरोजगारी, निरक्षता, कृषि एवं उद्योगों के उत्पादनों में कमी आदि। हम जितनी अधिक उन्नति करते हैं या विकास करते हैं, जनसंख्या उसके अनुपात में बढ़ जाती है। बढ़ती जनसंख्या के समक्ष हमारा विकास बहुत कम रह जाता है और विकास कार्य दिखाई नहीं देते। बढ़ती जनसंख्या के समक्ष सभी सरकारी प्रयास असफल दिखाई देते हैं। कृषि उत्पादन और औद्योगिक विकास बढ़ती जनसंख्या के सामने नगण्य सिद्ध हो रहे हैं। इन सभी बातों को ध्यान में रखते

हुए जनसंख्या वृद्धि पर नियत्रंण की अति आवश्यकता है। इसके बिना विकास के लिए किए गए सभी प्रकार के प्रयत्न अधूरे रह जाएँगे।

प्रश्न-

(क) बढ़ती जनसंख्या ने किसे जन्म दिया है?

(ख) विकास कार्य क्यों नहीं दिखाई देते ?

(ग) बढ़ती जनसंख्या के सामने कौन से प्रयास असफल दिखाई देते हैं ?

(घ) "नगण्य' शब्द का सही अर्थ क्या है?

उत्तर-

(क) बढ़ती जनसंख्या ने कई प्रकार की समस्याओं को जन्म दिया है। इनमें रोटी, कपड़ा, मकान की कमी, बेरोजगारी, निरक्षता, कृषि एवं उद्योगों के उत्पादनों में कमी आदि।

(ख) जनसंख्या वृद्धि के कारण हमें विकास कार्य नहीं दिखाई देते हैं।

(ग). बढ़ती जनसंख्या के सामने सभी सरकारी प्रयास असफ ल दिखाई देते हैं।

(घ)'नगण्य' शब्द का सही अर्थ है अपर्याप्त।

3. संसार में सबसे मूल्यावान वस्तु समय है क्योंकि दुनिया की अधिकांश वस्तुओं को घटाया-बढ़ाया जा सकता है, पर समय का एक क्षण भी बढ़ा पाना व्यक्ति के बस में नहीं है। समय के बीत जाने पर व्यक्ति के पास पछतावे के अलावा कुछ नहीं होता। विद्यार्थी के लिए तो समय का और भी अधिक महत्त्व है। विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य है शिक्षा प्राप्त करना। समय के उपयोग से ही शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। जो विद्यार्थी अपना बहुमूल्य समय खेल-कूद, मौज-मस्ती तथा आलस्य में खो देते हैं वे जीवन भर पछताते रहते हैं, क्योंकि वे अच्छी शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं और जीवन में उन्नति नहीं कर पाते। मनुष्य का कर्तव्य है कि जो क्षण बीत गए हैं, उनकी चिंता करने के बजाय जो अब हमारे सामने हैं, उसका सदुपयोग करें।

प्रश्न-

(क) समय को सबसे अमूल्य वस्तु क्यों कहा गया है?

(i) इसका एकक्षण भी घटाया-बढ़ाया नहीं जा सकता

(ii) सम्य व्यक्ति के वश में नहीं है।

(iii) समय ही व्यक्ति के जीवन को बदल सकता है

(iv) मनुष्य उस समय की गति को नहीं रोक सकता

(क) संसार में सबसे मूल्यवान वस्तु क्या है?
उत्तर- संसार में सबसे मूल्यवान समय है।

(ख) व्यक्ति के बस में क्या नहीं है?
उत्तर- समय के एक भी क्षण को बढ़ा पाना व्यक्ति के बस में नहीं है।

(ग) किस प्रकार के विद्यार्थी पछताते हैं?
उत्तर- जो विद्यार्थी अपना समय खेल-कूद, मौज-मस्ती एवं आलस में बिता देते हैं, वे पछताते हैं।

(घ) मनुष्य का क्या कर्तव्य है?
उत्तर- मनुष्य का कर्तव्य है कि बीते हुए समय पर विचार न करके जो समय अपने पास है उसका सदुपयोग करे।

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक सुझाइए
(i) समय का सदुपयोग
(ii) समय और मनुष्य
(iii) विद्यार्थी और समय
(iv) अमूल्य समय उत्तर

4) एक कौए ने मोर के पंख लगा लिए और अपने को मोर समझ कर मोरों की टोली में जा घुसा। उसे देखकर मोरों ने उसे फ़ौरन पहचान लिया। फिर क्या? दुसरे ही पल सारे मोर उस पर झपट पड। चोंच मारकर उसे अपनी टोली से दूर भगा दिया। रोता हुआ कौवा अपने घर वापिस आ गया। तभी तो कहा गया है कि नक़ल को अकल कहाँ।

(1) कौए ने किसके पंख लगा लिए थे?

- एक कौए ने मोर के पंख लगा लिए।

(2) कौवा किसकी टोली में जा घुसा?

- मोरों की टोली में

(3) मोरों ने उसे देखकर क्या किया?

- सारे मोर उस पर झपट पड।

(4) रोता हुआ कौवा कहाँ आ गया?

- रोता हुआ कौवा अपने घर वापिस आ गया।

(5) कहानी का उचित शीर्षक लिखो?

-कौआ और मोर

अपठित पद्यांश को पढकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1) माँ, ये लहरें भी गाती हैं
कल-कल, छल-छल के मधुर स्वर में
अपना गीत सुनाती हैं।
मैं कब से बुला रही इनको
पर मेरे पास नहीं आती हैं।

कुछ खेल खेलती इसलिय
तट तक आकर फिर भाग जातीं
मैं चलूँ, साथ खेलूँ इनके
देखो ये मुझे बुलाती हैं।
माँ, ये लहरें भी गाती हैं।

(क) लहरें क्या और किस प्रकार सुनाती हैं?

1. कल-कल मधुर गीत
2. कटुवचन
3. मधुभाषा

(ख) कौन, किसे बुला रहा है?

1. माँ बच्चे को
2. कवि लहरों को
3. गीत हमें

(ग) 'तट' शब्द का पर्यावाची लिखिए।

1. किनारा

2. अंबर

3. नदी

(घ) 'मधुर' शब्द का विलोम लिखिए।

1. कटु

2. कड़वा

3. मधु

(ड़) पद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

1. कवि और उसकी माँ

2. लहरें

3. सागर

2) आओ हम सब झूला झूलें

ऊँचें चढ़कर नभ को छू लें।

दुख-उदासी को हम भूलें

खुशियों की हर कलियाँ चुन लें।।

नई बहारें आएँगी।

सबका मन हर्षाएँगी।

दुख को दूर भगाएँगी

भर-भर खुशियाँ लाएँगी।।

(1) बच्चे ऊँचा चढ़कर किसे छूना चाहते है?

(क) झूले को (ख) नभ को

(2) झूला झूलने से मन में क्या परिवर्तन होगा?

(क) मन खुश होगा (ख) मन दुखी होगा

(3) नई बहारों के आने पर क्या होगा?

(क) मन दुखी होगा (ख) मन हर्षाएँगा

(4) दुख और उदासी को दूर भगाने क्या होगा?

(क) खुशियाँ भर-भर कर आएँगी (ख) मन उदास होगा

(5) पदयांश का उपयुक्त शीर्षक चुनिए-

(क)झूला झूलें (ख) गगन

(6) दिए गए शब्दों के विलोम लिखो।

(क) ऊँचा-नीचा (ख) सुख-दुख

3) यदि फूल नहीं बो सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ!
है अगम चेतना की घाटी, कमजोर बड़ा मानव का मन
ममता की शीतल छाया में होता। कटुता का स्वयं शमन।
ज्वालाएँ जब घुल जाती हैं, खुल-खुल जाते हैं मूंदे नयन।
होकर निर्मलता में प्रशांत, बहता प्राणों का क्षुब्ध पवन।
संकट में यदि मुसका न सको, भय से कातर हो मत रोओ।
यदि फूल नहीं बो सकते तो काँटे कम-से-कम मत बोओ।

प्रश्न

(क) 'फूल बोने' और 'काँटे बोने' का प्रतीकार्थ क्या है? 1
(ख) मन किन स्थितियों में अशांत होता है और कैसी स्थितियाँ उसे शांत कर देती हैं?
(ग) संकट आ पड़ने पर मनुष्य का व्यवहार कैसा होना चाहिए। और क्यों?
(घ) मन में कटुता कैसे आती है और वह कैसे दूर हो जाती है?
(ङ) काव्यांश से दो मुहावरे चुनकर वाक्य-प्रयोग कीजिए।

उत्तर

(क) इनका अर्थ है-अच्छे कार्य करना व बुरे कर्म करना।
(ख) मन में विरोध की भावना के उदय के कारण अशांति का उदय होता है।माता की शीतल छाया उसे शांत कर देती है।
(ग) संकट आ पड़ने पर मनुष्य को भयभीत नहीं होना चाहिए। उसे मन को मजबूत करना चाहिए। उसे मुस्कराना चाहिए।

(घ) मन में कटुता तब आती है जब उसे सफलता नहीं मिलती। वह भटकता रहता है। स्नेह से यह दूर हो जाता है।

(ङ) काँटे बोना-हमें दूसरों के लिए काँटे नहीं बोने चाहिए। घुल जाना-विदेश में गए पुत्र की खोज खबर न मिलने से विक्रम घुल गया है।

साहित्य-विभाग

प्र-1-अतिलघु प्रश्न-उत्तर लिखो।

1) चिड़िया के पंख कैसे है?

- चिड़िया के पंख नीले है।

2) चिड़िया रुचि से क्या खाती है?

- चिड़िया रुचि-से दूध भरे जुंडी के दाने खाती है।

3) चिड़िया किसके लिए गाती है?

- चिड़िया बूढ़े वन बाबा के लिए गाती है।

4) इस संस्मरण में लेखिका किसकी चर्चा कर रही हैं?

- इस संस्मरण में लेखिका अपने बचपन की चर्चा कर रही हैं।

5) लेखिका का जन्म किस सदी में हुआ था?

- 20वीं सदी में।

6) लेखिका को सप्ताह में कितने दिन चॉकलेट खरीदने की छूट थी?

- लेखिका को सप्ताह में एक दिन चॉकलेट खरीदने की छूट थी।

7) हर शनिवार को लेखिका को क्या पीना पडता था?

- हर शनिवार को लेखिका को ऑलिव ऑयल और कैस्टर ऑयल पीना पडता था।

8) केशव और उसकी बहन सुबह-सुबह आँखे मलते हुए कहाँ पहुँच जाते थे?

- केशव और उसकी बहन सुबह-सुबह आँखे मलते हुए कार्निस के सामने पहुँच जाते थे।

9) श्यामा मटके से क्या निकालकर लाई थी?

- श्यामा मटके से पानी निकालकर लाई थी।

10) कार्निस के ऊपर कितने अंडे थे?

- कार्निस के ऊपर तीन अंडे थे।

11) केशव ने किसे पालने की योजना बनाई थी?

- केशव ने चिड़ा और चिड़िया के बच्चे पालने की योजना बनाई थी।

12) कौन गोलहोकर भी तिरछा नज़र आता है?

- चाँद गोल होकरभी तिरछा नज़र आता है।

13) कौन क्या पहने हुए है?

- चाँद आकाश पहने हुए है।

14) चाँद का मुँह कैसा है?

उ- चाँद का मुँह गोरा-चिटठा है।

15) किसकी पोशाक कहाँ फैली है?

उ- चाँद की पोशाक चारों सिम्त में फैली हुई है।

16) जब से मनुष्य ने लिखना शुरु किया, तब से किसका आरंभ हुआ?

- जब से मनुष्य ने लिखना शुरु किया, तबसे इतिहास का आरंभ हुआ ।

17) 'प्रागैतिहासिक काल' का अर्थ क्या है?

- इतिहास के पहले के काल को प्रागैतिहासिक काल कहते हैं।

18) छोटू का परिवार कहाँ रहता था?

-छोटू का परिवार मंगल ग्रह पर बने भूमिगत घरों में रहता था।

19) सुरंगनुमा रास्ते का प्रयोग कौन करते थे?

- सुरंगनुमा रास्ते का प्रयोग चंदचुनिंदा लोग करते थे।

20) छोटु के पापा सुरंग से होकर कहाँ जाते थे?

- छोटु के पापा सुरंग से होकर काम पर जाया करते थे।

बाल-रामायण

21) अयोध्या किस राज्यकी राजधानी थी?

- अयोध्या कौशल राज्यकी राजधानी थी ।

22) वन में विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को कौनसी विधाएँ सिखाई ?

- विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण को बला और अतिबला नाम की विधाएँ सिखाई।

23) मारिच क्यों क्रोधित था?

- राम ने मारिच की माँ ताड़का का वध किया था इसलिए वह क्रोधित था।

24) राम के अयोध्या वापस लौटने पर राजा दशरथ ने क्या किया ?

राम के अयोध्या वापस लौटते ही राजा दशरथ ने राम को राज काज में शामिल करना शुरू कर दिया।

25) भरत और शत्रुघ्न कहाँ गए थे ?

- भरत और शत्रुघ्न अपने नाना केकयराज के यहाँ गए हुए थे ।

26)राम ने वन गमन को क्या कहा ?

-राम ने वन गमन को भाग्यवश आया उलटफेर कहा ।

27) राम ने सीता से क्या आग्रह किया ?

- राम ने सीता से अपने माता पिता की सेवा करने का आग्रह किया ।

28) सीता क्यों व्याकुल हो गयीं ?

- राम ने जब वन जाने के लिए सीता से विदा माँगी तो वह व्याकुल हो गयीं ।

29)राम का निर्णय सुनकर सीता ने उनके सम्मुख क्या प्रस्ताव रखा ?

उत्तर- राम नहीं माने तो सीता ने उनके साथ जंगल जाने का प्रस्ताव रखा ।

प्र-2 लघ प्रश्न-उत्तर लिखो।

1) इस कविता के आधार पर बताओ कि चिड़िया को किन-किन चीज़ों से प्यार है ?

उ-चिड़िया जिन चीज़ों से प्यार करती है वो इस प्रकारहैं-चिड़िया को खेतों में लगे जौ-बाजरे की फलियों से प्यार है। उसे जंगल में मिले एकान्त, जहाँ वह खुली हवा में गाना गा सकती है, से प्यार है। उसे नदी से प्यार है जिस का ठंडा और मीठा पानी वह पीती है। यह चीज़ें उसे आज़ादी का एहसास दिलाती हैं। इसलिए वह इन सब से प्यार करती है।

2) चिड़िया खाने म क्या पसंद करती है?

उ- चिड़िया खाने में दूध भरे ज्वार के दाने पसंद करती है।

3)लेखिका बचपन में इतवार की सुबह क्या-क्या काम करती थीं ?

उत्तरः लेखिका बचपन में इतवार की सुबह अपने मोजे धोती थी। उसके बाद अपने जूते पॉलिश करके चमकाती थी। इतवार की सुबह इसी काम में लगाती थी।

4) केशव और श्यामा के मन मेंचिड़िया के अंडों को लेकर किस-किस प्रकार के प्रश्न उठते थ?

उ-केशव और श्यामा के मन में अंडों को लेकर अनेक प्रश्न उठते थे जैसे कि अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? कितने होंगे? क्या खाते होंगे? उनमें से बच्चे किस तरह आएँगे? बच्चों के पर कैसे निकलेंगे? घोंसला कैसा है? क्योंकि वे अंडोंके बारे में जानना चाहते थे।

5) प्रेमचंद ने इस कहानी का नाम 'नादान दोस्त' रखा। तुम इसे क्या शीर्षक देना चाहोगे?

उ-मैं इस काहानी म वर्णित बचपन की नादानियों को देखते हुए इसका नाम 'बचपन की नादानियाँ' रखना चाहुँगा।

6) अक्षरो ंका क्या महत्व है?

-अक्षर लिखित भाषा की बुनियाद है। ये विचारों और ज्ञानके पसार में मुख्य भूमिका निभात है। अक्षरों क माध्यम से ही हम देश दुनिया को खबरे और जानकारी पढ़ पात है। इस प्रकार अक्षर बहुत महत्वपूर्ण है।

7) मनुष्य को कब से सभ्य कहाँ जाने लगा?

-आदमी अपने विचार और अपने हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। तब से मानव को सभ्य कहा जाने लगा।

8) छोटू को सुरंग में जाने की इजाज़त क्यों नहीं थी? पाठ के आधार पर लिखो।

उ-छोटू को या फिर किसी भी अन्य व्यक्ति को उस सुरंग में जाने की इजाज़त नहीं थी क्योंकि उस सुरंग से होता हुआ ज़मीन पर जाने का एक रास्ता था, आम आदमी के लिए इस रास्ते से जाने की मनाही थी।

प्र-3 दोर्घ प्रश्न-उत्तरलिखो।

1) कवि ने चिड़िया को छोटी, संतोषी, मुँहबोली और गरबीली चिड़िया क्यों कहा है?

चिड़िया छोटे आकार की थी और किसी भी बात को बोलने से नहीं झिझकती है इसलिए कविने उसे छोटी और मुँहबोली कहा है। वह संतोषी स्वभाव की है। अतः कवि उसे संतोषी कहता है। चिड़िया को अपने कार्यों पर गर्व है क्योंकि वह नदी के बीच से पानी पीने जैसा कठिन कार्य सफलतापूर्वक कर जाती है। यही कारण है कि कविने चिड़िया को गरबीली कहा है।

2)'तम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी।'यह कहकर लेखिका क्या-क्या बताती है?

- उन दिनों मनोरंजन के लिए कुछ घरों में ग्रामोफोन थ परंतु उसके स्थान पर आज हर घर में रेडियो और टेलीविज़न देखने मिलता है। कुलफ़ी की जगह आइसक्रीम ने लेली ह। कचौड़ी-समोसा पैटीज में बदल गया है।शहतूत,फ़ाल्से और खसखस के शरबत का स्थान कोक-पेप्सी ने ले लिया है।

3) केशव और श्यामा ने चिड़िया और अंडोंकी देखभाल के लिए किन तीन बातों का ध्यान रखा?

उ- केशव और श्यामा ने चिड़िया और अंडों की देखभाल के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा-

1-आराम के लिए कपड़ा बिछाया।

2-धूप से बचाने के लिए टोकरी से ढक दिया।

3-पास मेंदाना और पानी की प्याली भी रखी।

4) धरती पर मानव के उदभव और विकास के बारे में लिखो?

-धरतो परमानव ने करीब पाँच लाख साल पहले जन्म लिया।

-लगभग दस हजार साल पहले उसने गाँवो में बसना और खेती करना शुरू किया।

-पत्थरों के औजारों की जगह ताँबे व काँसे के औजार बनाए जाने लगे।

-करीब छह हजार साल पहले अक्षरों की खोज हुई।

व्याकरण-विभाग

वर्ण अक्षर- भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिस के टुकड़े नहीं किए जा सकते, वह वर्ण कहलाती है।

जैसे→अ, र, क्, म्, च् आदि

- भाषा के दो रूप होते है।

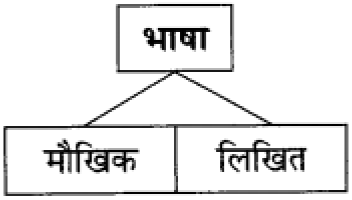

स्वर (vowel) - उन ध्वनियों को कहते हैं जो बिना किसी अन्य वर्णों की सहायता के उच्चारित किये जाते हैं। स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण,स्वर कहलाते हैं। हिन्दी भाषा में मूल रूप से ग्यारह स्वर होते हैं। ग्यारह स्वर के वर्ण : अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ए,ऐ,ओ,औ आदि।

1) भाषा के कितने रूप है? कौन-कौन से?

-भाषा के दो रूप है। मौखिक, लिखित।

2)वर्ण किसे कहते हैं?

- भाषा की सबसे छोटी इकाई, जिस के टुकड़े नहीं किए जा सकते, वह वर्ण कहलाती है।

3) स्वर की संख्या कितनी है?

- स्वर ग्यारह होते हैं।

संज्ञा

जो शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, भाव तथा स्थान का बोध कराते है , उन्हें संज्ञा कहते हैं

संज्ञा के भेद –

1) व्यक्तिवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं ।

जैसे –

वह कल लालकिला देखने गया |

वह राजस्थान में रहता है |

सचिन तेंदुलकर क्रिकेट बहुत अच्छा खेलता है |

2. जातिवाचक संज्ञा

जो शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान की संपूर्ण जाति का बोध कराते हैं, उन शब्दों को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- मोबाइल, टीवी (वस्तु), गाँव, स्कूल (स्थान), आदमी, जानवर (प्राणी) आदि।

जातिवाचक संज्ञा के अन्य उदाहरण

- स्कूल में बच्चे पढ़ते हैं।
- बिल्ली चूहे खाती है।
- पेड़ों पर पक्षी बैठे हैं।

3. भाववाचक संज्ञा

जो शब्द किसी चीज़ या पदार्थ की अवस्था, दशा या भाव का बोध कराते हैं, उन शब्दों को भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- बचपन, बुढ़ापा, मोटापा, मिठास आदि।

भाववाचक संज्ञा के उदाहरण

- ज्यादा दोड़ने से मुझे थकान हो जाती है।
- लगातार परिश्रम करने से सफलता मिलेगी।

4) समुदायवाचक संज्ञा

जिस संज्ञा शब्द से किसी समूह का बोध हो उसे समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं |
जैसे –
नेता जी के सम्मान में एक सभा आयोजित की गई |
मेज़ पर किताबों का बंडल रखा हुआ है |

5) द्रव्यवाचक संज्ञा - जिन संज्ञा शब्दों से किसी द्रव्य, धातु या पदार्थ आदि का बोध होता है उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं |
जैसे –
संदूक लोहे से बनी हुई है |
राधा ने पाँच लीटर दूध खरीदा |

निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित संज्ञा शब्दों के भेद लिखिए|

१.खिडकी के शीशे टूटे हैं| -जातिवाचक

२.हिमालय पर्वतो का राजा हैं| -व्यक्तिवाचक

३.आज मैं बहुत खुश हूँ| -भाववाचक

४.गरीबी बहुत बड़ा अभिशाप हैं| -भाववाचक

५.हाथी मस्त चाल चलता हैं| -व्यक्तिवाचक

६.करेले में कडवापन होता हैं| - भाववाचक

७.मेरा विद्यालय दिल्ली में स्थित हैं| -व्यक्तिवाचक

विशेषण

संज्ञा और सर्वनाम शब्दों को विशेषता प्रकट करने वाल शब्दों को विशेषण कहते है। जैसे-जोल, छोटा, नए, लाल।

विशेषण के भेद

विशेषण के मुख्यतः आठ भेद होते हैं :

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण

नीचे दिए गए वाक्यों में से विशेषण शब्द चुनकर लिखिए।

१ मुझे अपनी नौकरी बहुत अच्छी लगती है।
२ सिर में भयंकर दर्द हो रहा है।
३ मेरा परिवार बहुत खुश हुआ।
४ नेरवा हिमालय प्रदेश का सबसे ऊचा गाँव है।
५ मेरे गाँव में बडा डाकघर है।

नीचे दिए गए वाक्यों में विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए और उनके भेदों के नाम लिखिए।

१ नेहा ने लाल रंग की फ्रॉक पहनी है।- गुणवाचक

२ <u>बेईमान</u> नेता पकड़ा गया। - गुणवाचक
३ <u>चारों</u> मज़दूर काम कर रहे हैं। - संख्यावाचक

४ <u>दस किलो</u> आटा दे दो। - परिणामवाचक
५ उसे <u>थोड़ी</u> चाय पिलाओ। -परिणामवाचक

क्रिया →

जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं |

जैसे -

लड़के खेल रहे हैं ।

माँ खाना बना रही है ।

पिताजी अखबार पढ़ रहे हैं ।

1. सकर्मक क्रिया
2. अकर्मक क्रिया

<u>अकर्मक क्रिया</u>

जिस क्रिया का कार्य कर्ता तक ही सीमित रहे अर्थात जहाँ कर्म का आभाव होता है उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं ।

उदाहरण :

मीरा गाती है ।

मोहन खेलता है ।

<u>सकर्मक क्रिया</u>

जिस क्रिया के कार्य का फल कर्ता से निकलकर दूसरी वस्तु पर पड़ता है अथवा जिसमे कर्म भी होता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं ।

उदाहरण :

मीरा भजन गाती है ।

मोहन फुटबाल खेलता है ।

नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया शब्दों पर गोला लगाईए|

१.माँ खाना बना रही है|

२.राजू गेंद से खेलता है|

३.पापा समाचार पढ़ रहे है|

४.बगीचे में फूल खिले है|

५.नानी ने परियों की कहानी सुनाई|

६.आसमान में तारे चमक रहे है|

७.सूरज पूरब से निकलता हैं|

८.हमें सदा सच बोलना चाहिए|

सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है उन्हें सर्वनाम कहते हैं ।
उदाहरण : मैं, तू, आप (स्वयं), यह, वह, जो, कोई, कुछ, कौन, क्या ।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के मुख्य रूप से छः भेद हैं :

(१) पुरुषवाचक सर्वनाम

(२) निजवाचक सर्वनाम

(३) निश्चयवाचक सर्वनाम

(४) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

(५) सम्बन्धवाचक सर्वनाम

(६) प्रश्नवाचक सर्वनाम

<u>पुरुषवाचक सर्वनाम</u>

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के स्थान पर किया जाता है उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे - मैं, तुम, हम, आप, वे ।

<u>निजवाचक सर्वनाम</u>

जो सर्वनाम शब्द करता के स्वयं के लिए प्रयुक्त होते हैं उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं ।
जैसे :स्वयं, आप ही, खुद, अपने आप ।

<u>निश्चयवाचक सर्वनाम</u>

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है उसे निश्चयकवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे : यह, वह, ये, वे ।

<u>अनिश्चयवाचक सर्वनाम</u>

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं होता है उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं ।
जैसे : कुछ, किसी ने (किसने), किसी को, किन्ही ने, कोई, किन्ही को ।

<u>सम्बन्धवाचक सर्वनाम</u>

जिस सर्वनाम से वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से सम्बन्ध ज्ञात होता है उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं । जैसे : जो-सो, जहाँ-वहाँ, जैसा-वैसा, जौन-तौन ।

<u>प्रश्नवाचक सर्वनाम</u>

जिन सर्वनाम से वाक्य में प्रश्न का बोध होता है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं ।
जैसे : कौन, कहाँ, क्या, कैसे ।

निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम शब्द छाँटकर लिखिए।

1 मुझे काम है।
2 यहाँ कौन आया था?
3 मेरी कलम खो गई है।
4 यह है उनका घर।
5 वह मेरी कोई भी बात नहीं सुनती है।
6 जैसा करोगे,वैसा भरोगे।
7 बाहर कोई खड़ा है।

8 तुम्हारा नाम क्या है?

9 जिसकी लाठी उसकी भैंस।
10 वह घर स्वयं चला जाएगा।
11 माँ के कहने पर वह दौड़कर पानी ले आया।
12 उसका कहीं कोई पता न चला।

लेखन-विभाग

निबंध

1) स्वंतत्रता दिवस

15 अगस्त 1947 भारत के लिए बहुत भाग्यशाली दिन था। इस दिन अंग्रजों की लगभग 200 वर्ष गुलामी के बाद हमारे देश को आज़ादी प्राप्त हुई थी। भारत को आज़ादी दिलाने के लिए कई स्वतंत्रता सेनानियों को अपनी जान गवानी पड़ी थी। स्वतंत्रता सेनानियों के कठिन संघर्ष के बाद भारत अंग्रजों की हुकूमत से आज़ाद हुआ था। तब से ले कर आज तक 15 अगस्त को हम स्वतंत्रता दिवस मानते हैं।

भारत में हर वर्ष स्वत्रंता दिवस 15 अगस्त को मनाया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्वतंत्रता का विशेष महत्व होता इस लिए हर भारतीय के लिए यह दिन बहुत महत्व रखता है। 15 अगस्त 1947 को भारत को अंग्रजों की परतंत्रता के बाद स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। स्वतंत्रता दिवस को हम राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मानते हैं।

कई वर्षों के विद्रोहों के बाद ही हमने स्वतंत्रता प्राप्त की और 14 और 15 अगस्त 1947 की मध्यरात्रि को भारत एक स्वतंत्र देश बन गया। दिल्ली के लाल किला में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पहली बार भारत के झंडे का अनावरण किया था। उन्होंने मध्यरात्रि के स्ट्रोक पर "ट्रास्ट विस्ट डेस्टिनी" भाषण दिया। पूरे राष्ट्र ने उन्हें अत्यंत खुशी और संतुष्टि के साथ सुना। तब से हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर, प्रधान मंत्री पुरानी दिल्ली में लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं और जनता को संबोधित करते हैं। इसके साथ ही तिरंगे को 21 तोपों की सलामी भी दी जाती है।

इस दिन सभी सरकारी दफ्तर, कार्यालयों में तिरंगा फहराया जाता है और राष्ट्रगान "जन-गण-मन" गया जाता है। स्कूल, कालेजो में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और मिठाइयां बांटी जाती हैं।

कुछ भारतीय पतंग उड़ा कर तो कुछ कबूतर उड़ा कर आज़ादी मानते हैं। प्रतिवर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाना भारत के स्वतंत्रता के इतिहास को जिंदा रखता है और आजादी का सही मतलब लोगों को समझाता है।

2) भारत की सामाजिक समस्याएँ

यद्यपि भारत वर्ष में विभिन्नता में एकता कायम है। ये विभिन्नताएँ महान समस्याओं की प्रतीक हैं। जिस तरह हमारे देश में विभिन्नताएँ ही विभिन्नताएँ हैं, उस तरह से किसी दूसरे देश में नहीं दिखाई देती हैं।

हमारे देश में साम्प्रदाय जाति, क्षेत्र भाषा, दर्शन, बोली, खान पान, पहनावा-ओढ़ावा, रहन सहन और कार्य कलाप की विभिन्नताएँ एक छोर से दूसरे छोर तक फैली हुई हैं। यहाँ हिन्दु-धर्म, सिख-धर्म, ईसाई-धर्म, इस्लाम-धर्म, जैन-धर्म, बौद्ध धर्म, सनातन धर्म आदि सभी स्वतंत्रतापूर्वक हैं। हिन्दू, जैन, सिख, मुसलमान, पारसी आदि जाति और सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं। कुल मिलाकर यहाँ पन्द्रह भाषाएँ और इससे कहीं अधिक उपभाषाएँ या बोलियाँ हैं। खान पान, पहनावे आदि की विभिन्नता भी देखी जा सकती है। कोई चावल खाना पसन्द करता है, तो कोई गेहूँ, कोई मांस मछली चाहता है तो कोई फल सब्जियों पर ही प्रसन्न रहता है। इसी तरह से विचारधारा भी एक दूसरे से नहीं मिलती है।

इन विभिन्नताओं के परिणामस्वरूप हमारे देश में कभी बड़े बड़े दंगे फसाद खड़े हो जाते हैं। इनके मूल में प्रान्तीयता, भाषावाद, सम्प्रदायवाद या जातिवाद ही होता है। इस प्रकार से हमारे देश की ये सामाजिक बुराई राष्ट्रीयता में बाधा पहुँचाती है।अंधविश्वास और रूढिवादिता हमारे देश की भयंकर सामाजिक समस्या है। कभी किसी अपशकुन जो अंधविश्वास के आधार पर होता है।

भ्रष्टाचार हमारे देश की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या है, जो कम होने या घटने की अपेक्षा यह दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। कालाधन, काला बाजार, मुद्रा-स्फीति, महँगाई आदि सब कुछ भ्रष्टाचार की जड़ से ही पनपता है। अगर निकट भविष्य में इस सुरसा रूपी भ्रष्टाचार को रोकने के लिए हनुमत प्रयास नहीं किया गया तो यह निश्चय हमारी बची खुशी सामाजिक मान्यताओं को निगलने में देर नहीं लगायेगी।

छूआछूत जातिवाद और भाई भतीजावाद हमारी सामाजिक समस्याओं की रीढ़ है। इस प्रकार की सामाजिक समस्याओं के कारण ही सामाजिक विषमता बढ़ती जा रही है। इसी के फलस्वरूप हम अभी तक रूढिवादी और संकीर्ण मनोवृत्तियों के बने हुए हैं और चतुर्दिक विकास में पिछड़े हुए हैं।अशिक्षा और निर्धनता भी हमारी भयंकर सामाजिक समस्याएँ हैं। इनसे हमारा न तो बौद्धिक विकास होता है और न शारीरिक विकास ही।

3) दीपावली का निबंध

दिवाली के इस विशेष त्योहार के लिए हिंदू धर्म के लोग बहुत उत्सुकता से इंतजार करते हैं।यह बच्चों से लेकर बड़ों तक के लिए हर किसी का सबसे महत्वपूर्ण और पसंदीदा त्यौहार है। दीवाली भारत का सबसे महत्वपूर्ण और मशहूर त्यौहार है। जो पूरे देश में साथ–साथ हर साल मनाया जाता है। रावण को पराजित करने के बाद, साल के निर्वासन के लंबे समय के बाद भगवान राम अपने राज्य अयोध्या में लौटे थे। लोग आज भी इस दिन को बहुत उत्साह जनक तरीके से मनाते हैं। भगवानराम के लौटने वाले दिन, अयोध्याके लोगों ने अपने घरों और मार्गों को बड़े उत्साह के साथ अपने भगवान का स्वागत करने के लिए प्रकाशित किया था। यह एक पवित्र हिंदू त्यौहार है जो बुरे पन पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। यह सिखों द्वारा भी मुगल सम्राट जहांगीर द्वारा ग्वालियर जेल से अपने **घर** गुरु, श्रीहरगोबिंदजी की रिहाई मनाने के लिए मनाया जाता है।

इस दिन बाजारों को एक दुल्हन की तरह रोशनी से सजाया जाता है ताकि वह इस से एक अद्भुत त्यौहार दिख सके। इस दिन बाजार बड़ी भीड़ से भरा होता है, विशेष रूप से मीठाई की दुकानें। बच्चों को बाजार से नए कपड़े, पटाखे, मिठाई, उपहार, मोमबत्तियां और खिलौने मिलते हैं। लोग अपने घरों को साफ करते हैं और त्योहार के कुछ दिन पहले रोशनी से सजाते हैं। हिन्दू कैलेंडर के अनुसार सूर्यास्त के बाद लोग देवी लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा करते हैं। वे अधिक आशीर्वाद, स्वास्थ्य, धन और उज्जवल भविष्यपाने के लिए भगवान और देवी से प्रार्थना करते हैं। वे दिवाली त्यौहार के सभी पांच दिनों में खाद्य पदार्थों और मिठाई के स्वादिष्ट व्यंजन बनाते हैं। लोग इस दिन पासा, कार्डगेम और कई अन्यप्रकार के खेलखेलते हैं। वे अच्छी गतिविधियों के करीब आते हैं और बुरी आदतों को दूर करते हैं।

पहले दिन धनतेरस या धन्त्रावदाशी के रूप में जाना जाता है जिसे देवी लक्ष्मीकी पूजा कर के मनाया जाता है।लोग देवी को खुश करने के लिएआरती, भक्तिगीत और मंत्रगाते हैं।दूसरे दिन नरकाचतुर्दशी या छोटी दिवाली के रूप में जाना जाता है जिसे भगवान कृष्ण की पूजाकर के मनाया जाता है क्योंकि उन्होंने राक्षस राजा नारक सुर को मार डाला था। तीसरे दिन मुख्य दिवाली दिवस के रूप में जाना जाता है जिसे शाम को रिश्तेदारों, दोस्तों, पड़ोसियों और जलती हुई फायर क्रैकर्स के बीच मिठाई और उपहार वितरित करते हुए देवी लक्ष्मी की पूजा करके मनाया जाता है। चौथे दिन भगवानकृष्ण की पूजाकर के गोवर्धन पूजा के रूप में जाना जाता है। लोग अपने दरवाजे पर पूजाकर के गोबर के गोवर्धन बनाते हैं। पांचवें दिन यमद्वितिया या भाईदौज के रूप में जाना जाता है जिसे भाइयों और बहनों द्वारा मनाया जाता है। बहनोंने अपने भाइयों को भाईदौज के त्यौहार का जश्न मनाने के लिए आमंत्रित करती हैं।

दीवाली के त्यौहार को बुरे पर अच्छाई की जीत का प्रतीक भी माना जाता है। भारत की नहीं बल्कि और भी कई देशों में दीवाली का त्यौहार बहुत धूमधाम से मनाया जाता है।

पत्र-लेखन

1) बहन की शादी के लिए प्रधानाचार्य को एक सप्ताह की छुटटी हेतू प्रार्थना-पत्र लिखिए।

सेवा में प्रधानाचार्य
आरती हाई स्कूल,
आनद विहार,
गांधीनगर

मान्यवर,

ससम्मान आपकी जानकारी में लाना चाहती हूँ कि मेरे बड़े भाई का विवाह 20 सितंबर को होना तय हुआ है। इन स्थितियों में सात दिनों तक विवाह कार्य में व्यस्त होने के कारण विदयालय आने में असमर्थ रहूँगी।

सादर निवेदन है कि मेरी एक सप्ताह की छुटटी स्वीकार करने की कृपा करें।

आपकी आज्ञाकारी
अंकिता शाह कक्षा- 6
दिनांक- 18-4-2020

2) आपकी खोई हुई पुस्तक किसी अपरिचित द्वारा लौटाए जाने पर आभार व्यक्त करते हुए पत्र लिखिए।

२३, जीटीबीनगर,
दिल्ली।
दिनांक-२४अप्रैल, २०२०

आदरणीय कैलाश मिश्राजी,
नमस्कार,
कल मुझे डाक से एक पार्सल मिला। पार्सल खोलने पर मुझे यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ साथ ही प्रसन्नता भी हुई कि उसमें मेरी खोई हुई वही पुस्तक मौजूद थी, जिसके लिए मैं काफी परेशान था। पहले तो मैं विश्वास ही नहीं कर पाया कि वर्तमान युग में भी कोई व्यक्ति इतना भला हो सकता हैं, जो डाक स्वयं देकर दूसरों की खोई वस्तु लौटाने का कष्ट करे। मैं आपका हार्दिक धन्यवाद करता हूँ। यह पुस्तक बाजार में आसानी से उपलब्ध नहीं होती तथा मेरे लिए यह एक अमूल्य वस्तु हैं। आपने पुस्तक लौटाकर मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया हैं।इसके लिए मैं हमेशा आपका आभारी रहूँगा।
एक बार पुनः मैं आपको धन्यवाद करता हूँ।
आपका शुभाकांक्षी,
इन्द्रमोहन

3) अपने क्षेत्र की सफ़ाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

सेवा में
स्वास्थ्य अधिकारी
नोएडा नगर निगम
सेक्टर-4 गौतमबुद्ध नगर
गाजियाबाद
विषय-मोहल्ले की सफ़ाई के संबंध में पत्र
महोदय
आपको ध्यान नोएडा सेक्टर-4 के क्षेत्र में फैली गंदगी की ओर आकर्षित करना चहता हूँ। यहाँ की सड़कें महीनों से कूड़े से भरी हुई। हैं, रास्ते से निकलना भी दूभर हो चुका है। सड़क के आसपास व खुले स्थानों पर कूड़ा पड़ा है। चारों ओर मच्छरों का साम्राज्य है। गंदगी के कारण मलेरिया, वायरल तथा डेंगू फैलने का भी खतरा बना हुआ है। यहाँ के सफ़ाई कर्मचारी बहुत लापरवाह हैं। मुश्किल से एक सप्ताह में एक बार आते हैं। कूड़ा उठाने के नाम पर अलग से पैसे की माँग करते हैं। यहाँ कोई कूड़ेदान भी नहीं रखा गया है। अतः आपसे अनुरोध है कि इस मामले में व्यक्तिगत रूप से हस्तक्षेप करते हुए यहाँ की सफ़ाई व्यवस्था को ठीक कराने की कृपा करें।
सधन्यवाद

नोएडा सेक्टर-4 क्षेत्र के निवासी
दिनांक

निम्नलिखित विषय पर अनुच्छेद लिखिए।

1) अनुच्छेद - "परिश्रम ही सफलता की कुँजी है "

परिश्रम क्या है -जीवन में परिश्रम का योगदान।परिश्रम के लाभ परिश्रम जीवन का एक ऐसा मूल मंत्र है जो मनुष्य को प्रगति की राह पर लेजाता है। वास्तविकता और कठोर परिश्रम के माध्यम से ही मनुष्य को जीवन में सफलता प्राप्त होती है। सुनियोजित परिश्रम करके मनुष्य किसी भी उद्देश्य या लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। परिश्रम का महत्व सिर्फ व्यक्तिगत विकास से ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक, सांसारिक और राष्ट्र एवं जाति की उन्नति में भी योगदान देता है। परिश्रम छोटा बड़ा नहीं होता जैसे किसान का परिश्रम किसी वैज्ञानिक के परिश्रम से कम नहीं आँका जा सकता, क्योंकि दोनों का परिश्रम अतुल्य है। दोनों देश और अपनी उन्नति में सहायक सिद्ध होते हैं। जो मनुष्य जीवन निर्माण में परिश्रम की भूमिका को भली-भांति समझते हैं वह दूसरों से अधिक सबल सिद्ध होते हैं। नगरों, देश और दुनिया में लगातार होता विकास मनुष्य के अथक परिश्रम का प्रतीक है। जो मनुष्य परिश्रमी होते हैं वह दूसरों से कहीं आगे निकल जाते हैं वह अपने क्षेत्र में नाम कमा देश में ही नहीं बलिक विश्व भर में ख्याति प्राप्त करते हैं। ऐसे मनुष्य चिंतामुक्त और हृष्ट-पुष्ट रह कर जीवन के सुखों का उपभोग करते हैं।

2) अनुच्छेद- अभ्यास का महत्त्व

यदि निरंतर अभ्यास किया जाए, तो किसी भी कठिन कार्य को किया जा सकता है। ईश्वरने सभी मनुष्यों को बुद्धि दी है। उस बुद्धि का इस्तेमाल तथा अभ्यास करके मनुष्य कुछ भी सीख सकता है। अर्जुन तथा एकलव्य ने निरंतर अभ्यास करके धनुर्विद्या में निपुणता प्राप्त की। उसी प्रकार वरदराजने, जोकि एक मंदबुद्धि

बालकथा, निरंतर अभ्यास द्वारा विद्या प्राप्त की और ग्रंथों की रचना की। उन्हीं पर एक प्रसिद्ध कहावत बनी -

''करत-करत अभ्यास के, जड़ मति होत सुजान।
रसरि आवत जात तें, सिल पर परत निसान।।''

यानी जिस प्रकार रस्सी की रगड़ से कठोर पत्थर पर भी निशान बन जाते हैं, उसी प्रकार निरंतर अभ्यास से मूर्ख व्यक्ति भी विद्वान बन सकता है। यदि विद्यार्थी प्रत्येक विषय का निरंतर अभ्यास करें, तो उन्हें कोई भी विषय कठिन नहीं लगेगा और वे सरलता से उस विषय में कुशलता प्राप्त कर सकेंगे।

कहा भी गया है कि, "परिश्रम ही सफलता की कुँजी है।"

3)समय किसी के लिए नहीं रुकता

'समय' निरंतर बीतता रहता है, कभी किसी के लिए नहीं ठहरता। जो व्यक्ति समय के मोलको पहचानता है, वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त करता है। समय बीत जा ने पर किए गए कार्य का कोई फल प्राप्त नहीं होता और पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं आता। जो विद्यार्थी सुबह समय पर उठता है, अपने दैनिक कार्य समय पर करता है तथा समय पर सोता है, वही आगे चलकर सफल व उन्नतव्यक्ति बन पाता है।जो व्यक्ति आलस में आक रसमय गँवा देता है, उसका भविष्य अंधकार मय हो जाता है। संत कवि कबीरदास जी ने भी अपने दोहे में कहा है -

''काल करै सो आज कर,आज करै सो अब।
पल में पर लै होइगी,बहुरि करेगा कब।।''

समय का एक-एक पल बहुत मूल्यवान है और बीता हुआ पल वापस लौट कर नहीं आता। इसलिए समय का महत्व पहचानकर प्रत्येक विद्यार्थी को नियमित रूपसे अध्ययन करना चाहिए और अपने लक्ष्य की प्राप्ति करनी चाहिए। जो समय बीत गया उस पर वर्तमान समय में सोचकर और अधिक समय बरबाद न करके आगे अपने कार्य पर विचार कर लेना ही बुद्धिमानी है।